आरभ्यभवतोजन्म यावन्नन्दाभिषेचनम् ।
एतद्वर्षसहस्रन्तु शतं पञ्चदशोत्तरम् ॥

शुकदेव परीक्षित से कहते हैं कि आप के जन्म से राजा नन्द के अभिषेक (तख्तनशीनी) पर्य्यन्त १११५ वर्ष होते हैं किन्तु मगध देश के राजा नन्द के समय को महाराज परीक्षित के समय से अन्यून २५०० वर्ष होते हैं अब कहिये कि इतिहास ग्रन्थों की रीति से भागवत का लेख मिथ्या ठहरता है वा नहीं ? ।

वास्तव में पुराण उन मनुष्यों के द्वारा रचे गये हैं जो न इतिहास विद्या को जानते थे और न शास्त्रों से अभिज्ञ थे केवल मुसलमानों के जटल काफियों को सुन के उन की नकल किया करते थे ।

यह सब पुराण मुसलमानों के समय में बनाये गये हैं जो लोग इन नवीन ग्रन्थों को वेद मूलक वा वेदानुसार कहते हैं उन के नेत्रों पर पक्षपात का चश्मा लगा हुआ है क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्य्य ने भी पुराण शब्द वाच्य ब्राह्मण ग्रन्थों को ही माना है ।

॥ ओ३म् शम् ॥

१९३
८

ओ३म

॥ शास्त्रार्थ बिष्णुगढ़ ॥

जोकि

स्थान बिष्णुगढ़ जिला फर्रुखाबाद में आर्य्य समाज
और धर्म सभा के मध्य में हुआ

जिस्को

दीनदयाल शर्म्मा स्थान बीरामऊ
पो० आ० शिवराजपुर
जिला कानपूर
ने छपवाया

यह पुस्तक श्रीमान पण्डित देवदत्त शास्त्री
वैदिक पाठशाला पुराना कानपुर के
पास भी मिलेगा

———ooo———

पण्डित मनोहरलाल मिश्र प्रोप्राइटर के द्वारा
कानपुर
रसिक यन्त्रालय में मुद्रित हुआ
पहिलीबार १०००] १८९२ [मूल्य ।॥ प्रति

जिस प्रति पर हमारे हस्ताक्षर न हों
वह चोरी की समझो

ओ३म्

विदित होकि सम्वत् १९४८ ता० २० नवम्बर सन् ९१ ई० को विष्णुगढ़ में शास्त्रार्थ होना निश्चय हुआ था विष्णुगढ़ाधीशों के आज्ञानुसार प्राइवेट सेक्रेटरी पं० हनुमानप्रसाद जी ने प्रथमहीं से आर्य्य समाज फर्रुखाबाद द्वारा आर्य्य पण्डितों के समीप निमंत्रण भेज दियाथा नियत समय पर आर्य्य पण्डित देवदत्तशास्त्रीजी तथा पं० भीमसेनशर्म्माजी तथा अन्य २ सामाजिक पुरुष भी पधारेथे विष्णुगढ़ के शास्त्रार्थ की खबर तो चारो ओर छागई थी शास्त्रार्थ की खबर सुनतेही आर्य्य वर श्रीमान् स्वर्ग वासी लाला जगन्नाथप्रसाद जी रईस फर्रुखाबाद ने श्रीमान्यवर यतिवर श्रीस्वामी प्रकाशानन्द सरस्वतीजी को भी भेज दिया था इसी अवसर पर पं० हरिशंकरलाल शास्त्रीजी का भी समागम गुरसहायगंज में हुआ पं० हरिशंकरलालजी से वार्तालाप होने के पश्चात् उक्त पण्डितजी ने प्रकट किया कि मैं वृद्ध हूं बहुत काल से मेरा अध्ययन भी छूटगया है मैं शास्त्रार्थ नहीं कर सक्ताहूं कदाचित् पं० मुनीश्वरजी करें तो करें क्योंकि पं० मुनीश्वरजीनेही इस शास्त्रार्थ होने का प्रस्ताव किया है यह वार्तालाप छिबरामऊ तक होतीगई कारण यह था कि हम लोग तथा उक्त पंडित जी दूसरी सवारी न होने से

एकही सवारी पर गये थे नियत समय के प्रथमही एक दिवस हम लोग विष्णुगढ़ पहुंच गये इसी दिवस श्रीमान् विष्णुगढ़ाधीशजी भी स्वामीजी से मिलने को पधारे श्रीमानों ने बहुत कुछ अन्य २ विषय में कथन कर स्वामीजी से कहा कि दूसरे पक्ष की ओर से सिवाय पं० हरिशंकरलाल जी के कोई पंडित नहीं आयाहै इससे शास्त्रार्थ नहीं हो-सकता कल्ह के दिवस आप लोगों के व्याख्यान कराये जावेंगे परसों आप लोग चलेजाना इस समयतो श्रीमानोंने सर्व प्रकार से अपनी सहानुभूति प्रकट की दूसरे दिवस प्रातःकाल होतेही पं० हरिशंकरलालजी के पुत्र तथा अन्य पंडित भी पधारे श्रीमानों ने दूसरे पक्ष के पंडितों से कुछ कथन कर शास्त्रार्थ के लिये तैयार किया शास्त्रार्थ का समय इसी दिवस बारह बजे पर नियत हुआ नियत समय पर आर्य्य पंडित भी पधारे श्रीमानोंने आज्ञा दी कि शास्त्रार्थ का होना आरम्भ हो आर्य्य समाज की ओर से कहागया कि शास्त्रार्थ के नियम बनजाना चाहिये द्वितीय शास्त्रार्थ लेख द्वारा हो क्योंकि लेख द्वारा शास्त्रार्थ न होने में कई प्रकार के विघ्न हैं प्रथम तो कोई २ शब्द उच्चारण कर दोनों ओर के पंडित बदल सकते हैं कि हमने इन शब्दों को नहीं कहा तो शास्त्रार्थ का निर्णय होना कठिन है साथही यह

भी निश्चय होजाय कि शास्त्रार्थ किस विषय पर होगा और कौन २ से ग्रंथों का प्रमाण होगा इस विषय पर अनु मान दो घंटे के वार्तालाप हुआ बहुत समय के पश्चात् निर्णय हुआ कि शास्त्रार्थ पुराणों के विषय पर हो कि अष्टादश पुराण प्रमाण के योग्य हैं अथवा कपोलकल्पित हैं दोनों पक्ष के पंडितों को तीस २ मिनट कहने को समय दिया गया दोनों ओर के पंडितों ने निम्न लिखित ग्रंथ प्रमाण के योग्य स्वीकार किये श्रीमानों की आज्ञानुसार लेखबद्ध शास्त्रार्थ होना प्रारम्भ हुआ इस शास्त्रार्थ में विष्णुगढ़ाधीशजी को सभापति बनाये गये ॥

आर्य्य पंडितों ने निम्न लिखित ग्रंथ प्रमाण किये चार वेद, चार उपवेद, ६ अंग, ४ ब्राह्मण, ६ शास्त्र और वेदानुकूल मनुस्मृति ॥ धर्म सभा की ओर से ॥

श्रुति स्मृति-सदाचार और १८ पुराण आर्य्य समाज की ओर से लेखक पं० गणेशप्रसाद और धर्म सभा की ओर से पं० पुत्तूलाल नियत किये गये !

आर्य्य समाज की ओर से श्रीमान स्वामी प्रकाशानन्द स० जी तथा पं० देवदत्त शास्त्रीजी तथा पं० भीमसेन शर्म्मा जी

धर्म सभा की ओर से ॥

पं० मुनीश्वरजी तथा प० हरिशंकरलालशास्त्रीजी तथा उन के पुत्रादि ।

प्रथम पंडित भीमसेनजी ने सभापतिजी की आज्ञानुसार भागवतादि अष्टादश पुराणों का खंडन करना आरम्भ किया ॥ समय ४ बजकर ४५ मिनट पर

हम लोग ब्रह्मवैवर्त्तादिक को नहीं मानते क्यों कि वेद विरुद्ध हैं वेद ईश्वरीय विद्या है उन में विरोध नहीं है परन्तु पुराणों में परस्पर विरोध है जैसे शिव पुराण में और देवी भागवत में यथा महा निर्वाण तंत्र में वा पद्म पुराण में वैष्णव मत की निन्दा लिखी है शिवजी को साक्षात ब्रह्म ठहराया है विष्णु को नीचा वा सेवक माना है और शैव मत सम्बन्धी पुराणों में रुद्राक्षादि धारण का महात्म लिखा है और वैष्णवों के तिलकादि की निन्दा लिखी है कि

(ऊर्ध्वपुंड्र०)

मतलब यह है कि जो ऊर्ध्वपुंड्र धारण नहीं करता है उस के मृत्यु तुल्य मुख को देख कर सूर्य्य का दर्शन करे शिव पुराण में लिखा है कि

यश्चसंतप्तशंखादि, लिंगचिन्हधरोनरः

जो तपे शंख चक्र से शरीर को नहीं दगाता उसको सब प्रकार के दुःख भोग मिलते हैं और कोटि वर्ष तक चांडाल योनि में जाता है इत्यादि परस्पर विरुद्ध लेख वेदानुकूल नहीं होसक्ते जैसे वादी प्रति वादी दोनों के पक्ष

ठीक नहीं ठहरसक्ते एकही का ठीक रहता है वैसेही पुराणों में अनेक तरह के मत हैं जो एक दूसरे से विरुद्ध हैं इस हेतु सब ठीकनहीं वेद ईश्वरोक्त विद्या है उसमें परस्पर कुछ भी विरोध नहीं है पुराणों में परस्पर विरोध न होता क्योंकि एकही मत का मंडन होता जैसा वेद में है तो माननीय कह सक्ते थे पुराणों में बहुतसी असम्भव बातें हैं जिन को हम आगे २ दिखलावेंगे ॥

उत्तर धर्मसभा की ओर से ॥

झब्बूलाल बोले कि—इस के अन्तर वेद शब्द के तुल्य है अर्थ जिस का जैसा जो अधिकरण में क्वप प्रत्ययान्त विद्या शब्द १४ भेद उसके अन्तर गत और सुगम रीति से अर्थ का बोधक होने से चतुर्वर्ग सब फल का दाता और स्त्री सहित चारो वर्णों का जिस में अधिकार है इसी से याज्ञवल्क्य ने १४ विद्यायें सब से प्रथम जो गिना है ऐसे पुराण शब्द के अर्थ को प्रथम कह कर पुराण के जिस को बोध होता है उस का वर्णन करते हैं और पुराण मक्षिका के निगले वमन के समान प्रमाण हैं उन के मत का सत्यार्थ कहते हैं और सोई दिखाते हैं और पूर्ववत् है अर्थ जिस का ऐसे पुरा शब्द से ख्युट्प्रत्यय किया इस से यु शब्द को अन आदेश होने पर और [पुराणप्रोक्तेषु०] इस सूत्र में

पुराण शब्द आगमों को अनित्य होने से सुट् आगम को जब अभाव हुआ तब बड़े यत्न से मुनियों ने व्याकरण में पुराण शब्द को सिद्धि किया है वह पुराण शब्द योग रूढ़ि से ब्रह्मवैवर्तादि ग्रन्थों का बोधक है वे पुराण शब्द के अर्थ हैं यदि पुराण शब्द अप्रमाणिक होता तो उस के वाचक पुराण शब्द की सिद्ध में जो परिश्रम हुआ है वह वृथा हो जाता यजुर्वेद-साम-अथर्ववेद चतुर्थमिति इतिहास पुराण पंचमम् वेदानाम् वेदम्। दो मिनट और मिले-एतस्य ॥

पं० भीमसेन शर्म्मा :—

पुराण शब्द को हम लोग भी मिथ्या नहीं मानते कि पुराण कोई चीज नहीं है वा व्याकरणादि से पुराण शब्द की सिद्धि करना व्यर्थ हो यह हमारा पक्ष नहीं है किन्तु हम ब्रह्मवैवर्तादिक को पुराण शब्द का वाच्य नहीं मानते और पुराण शब्द का अर्थ यह है कि (पुरानवं भवतीति पुराणम्) निरुक्त, जो बनाते समय नवीन हो और व्याकरण के (सायं चिरम्०) सूत्र में पुराण शब्द की सिद्धि किसी टीकाकार ने नहीं दिखाई यद्यपि व्याकरण से सिद्धि होसकती है और इसी के अनुसार और निरुक्त के अनुसार सिद्धि किया है पुराण शब्द का लाक्षणिक अर्थ यह लिखा है कि(सरगसर्ग त०) इसलोक कथन के अनुसार जिन पुस्तकों को

पुराण मानो जाय उनमें शैव वैष्णवादिक मतों का झगड़ा न होना चाहिये क्योंकि लक्षण से विरुद्ध है और पुराण शब्द लोक में अधिक तर विशेषणवाची आया करता है जिस का अपभ्रंश लोक भाषा में पुराण कहते हैं व्याकरण में एक सूत्र है (पुराण प्रोक्तेषु ब्राह्मण कल्पेषु) जिसपर का शिकाकार ने लिखा है कि (पुराणेन चिरन्तनेन मुनिनाये प्रोक्तायेग्रन्थास्ते ब्राह्मण कल्पाः) इससे यहां मुनि का विशेषण पुराण शब्द है ग्रन्थों का वाचक पुराण शब्द आता है जैसे (ब्राह्मणानीतिहासान) यानी इतिहास-पुराण-कल्प गाथा-और नाराशंसी ये ब्राह्मण पुस्तकों के नाम हैं ब्रह्मवैवर्तादि पुस्तकों का नाम पुराण नहीं है ऐसा कोई प्रमाण आर्य ग्रन्थों में नहीं मिलता और पुराण शब्द का जो पुराना अर्थ है वह भी इनमें नहीं घटता क्योंकि बहुत थोड़े काल पहिले जो लोग होगये हैं उनका भी वर्णन उनमें है इससे पुराण शब्द करके ऐतरेयादि ब्राह्मण ग्रन्थों का और विशेषण वाची होना मन्तव्य है ॥

॥ उत्तर धर्म्मसभा झवेरीलाल ॥

अब यह मालूम हुआ कि पुराण शब्द के अल्प ग्रह में भ्रम है सो अल्प ग्रह इस तरह है (अल्प ग्रह व्याकरणोपमान) इतनी से अल्प ग्रह होता है इससे यह बात पाई

गई कि अल्प ग्रह होने में लोकही प्रमाण है तथा [चोक्तम् महाभाष्येकुम्भकार कुलंगत्वा कुलघटंकार्य्यमेतत् करिष्यामि] तो इसमें पुराण शब्दमें लोकही प्रमाण पायागया ऐसीव्यवहारमें सब सज्जन पुरुष पुराण शब्दसे ब्रह्मवैवर्तादि के ग्रहण होतेआये हैं यह सदाचार प्रमाणहै तथा[चोक्तम्]इससेपुराण शब्द लेने में लोकही प्रमाण प्रधान है जब लोकही प्रमाण प्रधान है जब लोकही प्रमाण सिद्धि है तो अन्य प्रमाण की कुछ जरूरत नहीं क्योंकि [प्रमाणेषु प्रत्यक्षम्] इससे साबित हैकि प्रत्यक्ष प्रमाण में अन्य को जरूरत नहीं दूसरा लौकिक प्रमाण और है कि जिस प्रकार से प्रथम वृक्ष में दो पत्ते होते हैं कालान्तर में अनेक शाखा और पत्तों करके युक्त होताहै इसी प्रकार प्रथम वेद संहिता मात्र था फिर महर्षियों ने अपने २ ग्रंथ बनाकर वेद को अलंकृत किया इसी तरह से पुराण भी सर्वथा सिद्ध है तथा [वेदोखिलो धर्म्म मूलं] इसमें वेद शब्द को मूलही करके सिद्धि किया है सो सम्पूर्ण इसी तरह जो प्रमाणहै इससे सर्वथा शङ्का ग्रह अयुक्त है कि वेद में पुराण का प्रमाण नहीं है तथा ऋग्वेद-(अग्निः पूर्वेभिरृषिभिः) कि अग्नि जो परमेश्वर पूर्व तथा नवीन ऋषियों करके माननीय है किसी महर्षि का यह सिद्धान्त नहीं है कि इससे अबभी कोई महात्मा सत्यप्रीति

पादन करेगा उसका भी वेदाङ्ग के तुल्य प्रमाण आस्तिक पुरुषों को मानना होगा ॥

उत्तर आर्य समाजिक — भीमसेन शर्मा

पुराणों के परस्पर विरुद्ध होने में पद्मपुराण वा शिवपुराण का प्रमाण दिया था उसमें उनकी मिथ्यापन वा वेद विरुद्ध होना साबित है क्योंकि ऊर्ध्वपुंड्र वा रुद्राक्ष धारण की वेद में आज्ञा नहीं है उसका उत्तर हम को मिलना चाहिये था सो अब तक नहीं मिला और जब ब्रह्मवैवर्तादिकों का विरोध न हटादिया जाय तबतक मान्य नहीं होसक्ते और न पौराणिक पक्ष को कोई पुष्ट मान सकता है (२) हमने पुराण शब्द को विशेषण वाच के ठहराया तथा ब्राह्मणों के पुराण होने में प्रमाण दिया उसका कुछ उत्तर न दिया और इन दोनो बातों का उत्तर न देने से सब लोग अनुमान कर सकते हैं कि यातो हमारा पक्ष स्वीकार प्रतिवादी ने करलिया या उत्तर देने को शक्ति नहीं लोक से शब्दों के अर्थों का निर्णय होजावे तो व्याकरणादि ग्रंथ जिन से शब्दों का निर्णय होता है व्यर्थ हो मनुस्मृति में लिखा है कि (श्लोकवृत्तंवर्त्तेत)

अर्थात् विद्वान लोग शास्त्र के अनुसार आचरण करें और लोक में अज्ञानी लोग अनेक प्रकार की भेड़िया धसान

को खड़ीकर लेतेहैं परन्तु विद्वान ऐसा नहींकरते बल्कि शास्त्रानुकूल करतेहैं इससे पुराण करके ब्रह्मवैवर्तादि के ग्रहण में लोक का प्रमाण देना लोक में ठीक नहीं लोक में गौरी नाम पर्वती का है वैदिक में गौरी नाम वाणी का है ॥

इत्यादि लोक और वैदिक में शास्त्र का प्रमाण है उस के अनुसार शास्त्र रीति मानी जाती है ॥

उत्तर धर्म्मसभा की ओर से ॥

बड़े आश्चर्य की बात है कि मैंने अपने माननीय ग्रंथों का उत्तर नहीं दिया बल्कि जो ग्रंथ विशेष कर के आर्य्य पुरुषों के माननीय थे उन्हीं का प्रमाण दिया उसका कोई उत्तर विद्वता से नहीं मिला बल्कि असभ्यता से यह बात साबित की जातीहै कि तुम लोग वृत्ति को जीविका के अर्थ वर्तते हो अब पण्डित भीमसेन शर्मा को अवश्य इस बात को साबित करना चाहिये कि हम जीविकार्थ एक वेद को ढाल बना कर लोगों को नहीं भरमाते क्योंकि ब्राह्मण के वास्ते जो श्लोक भीमसेन ने पढ़ा उसके पहिले लिखा है ॥

(ऋतामृताभ्यांजीवेत) ऋतु हतो उंछ शिला का नाम है और अमृतनाम बिना मांगे मृत नाम मांगने का है सत्यानृतं नाम व्योपार का है और नौकरी श्ववृत्ति का नाम है

इस से पूंछना चाहिये कि आप लोग जीविका करतेहो वा
वैसेही । महाशयो इस दिवस सात बजेका समय नियत हो
चुका था इस से आर्य्य पण्डितों को समय नहीं दिया गया
सात बजे सभा विसर्जन हुई श्रीमानों ने दोनो ओर के पक्ष
वालोंको आज्ञादी कि कल्ह १२बजेपर शास्त्रार्थ का होना
आरम्भहोगा। पाठकगण बुद्धिमान लोगतो इतनेही में समझ
गये होंगेकि किस पक्षको विजयहुई निर्णय तो होही चुका
था पर राजासाहब के आज्ञानुसार दूसरे दिवस यानी ता०
२१-११-८२ शनिवार को १२बजे सभाएकत्रित हुई कि इस
दिवस पं०कृष्णदत्तजी भी आर्य्यसमाज की ओरसे पहुंचगये
थे इस दिवस धर्म्म सभा वालों ने राजाजी के अच्छे प्रकार
कान भरे और शास्त्रार्थ में बड़ा गड़ बड़ मचाया कि
शास्त्रार्थ अन्य विषय पर हो दूसरेपक्ष वालों को तो शंकित
होगया था कि हम लोग नहीं ठहर सकेंगे क्योंकि अष्टादश
पुराणों का तो कपोल कल्पित होना शंकित होही चुका
था ये समझते थे कि रही सही आज अष्टादश पुराणों की
अच्छे प्रकार पोल खुलेगी इस से टालनाही अच्छा है बहुत
देर तक वाद विवाद होकर राजाजी ने निर्णय किया कि
कल्ह केही विषय पर शास्त्रार्थ हो परन्तु इस दिवस दोनों
पक्ष वालों को दश दश मिनट दिये जायं। महाशय ! इस

दिवस आर्य्यवर पण्डित देवदत्त शास्त्री जी ने शास्त्रार्थ में
बैठने का विचार किया था इसपर पं० पुत्तूलाल ने फरमाया
कि यदि पं० भीमसेन यह लिखदें कि हम शास्त्रार्थ नहीं
कर सकते तो हम अन्य पंडितों से शास्त्रार्थ करें इस बात
को सुनकर पं० भीमसेन जी आसन पर उपस्थित हुए इतने
में राजा साहब ने आज्ञा दी कि शास्त्रार्थ संस्कृत में हो
इस बात को सुनतेही पंडित पुत्तूलाल जी तो आसन त्याग
कर चम्पत हुए और पं० महादेवप्रसाद जी शास्त्रार्थ के लिये
तैयार किये गये तब राजा जी ने आज्ञा दी कि आर्य्य स-
माज को भी इख्तियार है कि जिसको चाहे शास्त्रार्थ करने
को बैठादें पंडित देवदत्त शास्त्री जी को विशेष इच्छा थी
इससे पंडित जी शास्त्रार्थ को उपस्थित हुए प्रथम पंडित
देवदत्त शास्त्री जी ने दश मिनट तक संस्कृत में अच्छे प्र-
कार खंडन किया कि अष्टादश पुराण कपोल कल्पित है
इसी अवसर में राजा जी ने पंडित जी से विनय की कि
आप लोग संस्कृत में बात चीत कीजिये किन्तु लेख बद्ध न
हो क्योंकि समय बहुत लगता है जो शब्द पकड़ाजाय उस
पर बहस हो और वह लिखलियो जाय महाशय राजा जी
की आज्ञानुसार पं० देवदत्त शास्त्री जी ने संस्कृत का भा-
षण करना आरम्भ किया दूसरे पक्ष वाले समझते होंगे कि

आर्य्य समाज में कोई संस्कृतज्ञ पंडित नहीं है महाशय उक्त पंडित जी की प्रशंसा करना अपने पक्ष को सिद्ध करना है पर उस समय जो पंडित जी संस्कृत में भाषण करते थे उस शोभा को वहां वालेही समझते होंगे यहां तक पंडित जी ने ३०। ३५ मिनट तक धारा प्रवाह संस्कृत का बहादिया राजा जी ने भी समझ लिया कि धर्मसभा वाले संस्कृत में ठहर नहीं सकते पंडित महादेवप्रसाद जी बोलने में हिचकिचाते थे राजा जी ने फिर विनय की कि आप संस्कृत का बोलना बन्द कर दीजिये क्योंकि हम लोग संस्कृत में कुछ नहीं समझ सकते इससे शास्त्रार्थ लेख वह भाषा में हो फिर १० मिनट तक दूसरे पक्ष वालों ने भी संस्कृत में लिखाया पश्चात् पं० देवदत्त शास्त्री ने भाषा में लिखाना आरम्भ किया ॥

॥ श्लोक ॥

क्रमेण तस्यां नृपतेः सभायां विद्यावयोवृद्ध निविष्टितेषु ।
पुराणवेदार्थविचारकृत्सु सभापतिस्तत्र दिदेश माज्ञां ॥१॥
दिनेह्यतीते नृगिराविचारः प्रारम्भि विद्या कुशलैर्भवद्भिः ।
सदाद्यगीर्वाणपथेनसाध्यः प्रस्तूयतादिव्यगिराविचारः ॥२॥

श्रीमतां सभ्यगणानां विद्यावाद वाग्मिनाम् अधीत व्याकरणादि शास्त्राणां विद्वद्वराणां सद सन्मार्गं गवेषकाणां

आर्य्यानार्य्य पंडित वराणां विष्णुगदेश सभाम् प्रविष्टा नाम सिंह व्याघ्रयो रामिष मुद्दिश्य पराक्रमाति शयं चिकीर्ष्वोरिव प्रयत मानानां वादि प्रतिवादिनां सभामंडले विजिगी षुणां वाग्प्रपञ्चात्मकं विचारा ति शयम् भाषणमभृत् पंडित वरस्य देवदत्तस्य पंडित महादेवं प्रत्यम् प्रश्नः भो महादेव अधीती व्याकरणादि शास्त्रार्थे भवद्भिस्तर्हि पुराण निष्ठाया प्रमाण्य ता तस्याम् प्रतिज्ञा दाष्ट विधाना मन्यतम् प्रमाणं दर्शयेतिम महादेवेन प्रमाणंमदत्वैव किञ्चभाकिञ्चभो इत्ये वावादितस्यां सभायां प्रविष्टा सर्वे श्रोतरः अघसन् हास्यानन्तरं किमपिनोत्तरितम तदा विष्णुगणपतिनोक्तं मस्यांसभा सभ्यगणैः शास्त्रार्थं जिज्ञासु भिर्देश देशान्तरादागतैः किमपिनोबोधि ह्यतः नृगिरमादाय पुनर्विचार आरब्धः ॥

जोकि संस्कृत २५ मिनट में पंडित देवदत्त शास्त्री जी ने भाषण किया था उसका कुछ लेख ऊपर दिया गया है

उत्तर आर्य समाज की ओर से — पं० देवदत्त शास्त्री

जोकि प्रतिवादी ने महाभाष्य के आन्हिक में पुराण विषय में प्रमाण दिया है वह सर्वथा असम्भव है क्योंकि महाभाष्यकार शब्द का निरूपण करते हैं नकि पुराणों के प्रमाण अप्रमाण का निरूपण करते हैं यदि उसमें पुराण शब्द का उच्चारण होगया इससे पुराणों का प्रमाण नहीं सिद्ध होता

जो कि प्रतिवादी ने पुराण ब्रह्मवैवर्तादिक माने हैं उनको वहां ग्रहण नहीं क्योंकि उक्त भाष्य में पुराण शब्द से ब्राह्मण ग्रन्थों का ग्रहण है तथा भाष्यकार ने अपने समय में जोकि प्राचीन ग्रन्थ विद्यमान थे उन्हीं का शब्द विषय में कथन किया है जबकि अपने पश्चात् जो ग्रन्थ होनेवाले थे महाभाष्य से पीछे हुये ब्रह्मवैवर्तादिकों का भाष्य में कैसे लेख होसक्ता है

धर्म्मसभा की ओर से

जो कि वादी ने कहा कि भाष्यकार को शब्द विषय में प्रमाण माननीय है क्योंकि शब्द विचार करते हैं उसमें यह देखना चाहिये जो घट देखने के वास्ते आंखो खोलता है वह पट को भी जरूर देखता है इसी प्रकार से शब्द विषय से अन्यत्र भी भाष्यकार के वचन को प्रमाण न्याय है जो वादी ने पुराण शब्द से ब्राह्मण ग्रहण किया है वह ब्रह्मवैवर्तादिकों का ग्रहण नहीं है उसमें यह पूंछना चाहिये पुराण शब्द से ब्राह्मण ग्रहण में क्या प्रमाण है बल्कि ब्रह्म वैवर्तादिकों का ग्रहण करना लोक में प्रसिद्ध है और भाष्यकार पुराण कर्ताओं से पूर्व के हैं इसवास्ते आगे होनेवाली पुराणों को क्योंकर करसक्ते हैं इसका उत्तर यह है कि ऋषि को कालत्रय का ज्ञान होता है जैसा कि (वासुदेवार्जुनाभ्यां) इस सूत्र में कृष्ण और अर्जुन का उपपादन

सूत्रकार ने किया और भाष्यकार ने व्याख्यान किया अगर जो व्याख भाष्यकार के पीछे हैं तो कृष्णार्जुन जरूरही पीछे के होसक्ते हैं ॥

आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

देखिये कि भाष्यकार ने यावत् शब्दों को सिद्ध किया और सूत्रों का व्याख्यान भी किया जिससे लोक वेद न्यायादि शब्द सिद्ध होते हैं इससे यदि वेदादि शास्त्रों का ग्रहण होजाता तो प्रथक २ नाम धेय शब्द वेद न्याय धरकर जो विषय निरूपण किये हैं वे व्याकरण के अन्तरभूत होगये प्रथक निरूपण उनका निष्फल होता है क्योंकि शब्द ध्वनिहो से उनका विषय गृहीत होजाता है और जो वादी ने कहा कि घट के वास्ते जो नेत्र खोलता है वह पट को भी देखता है यह ठीक है जो घट के लिये नेत्र खोले और पट को न देखे तो मध्य में पट के सम्बन्ध से गिरपड़ेगा क्योंकि वह नेत्र के अभाव होने से यष्टि आदि के द्वारो घट तक पहुंचता है और जो कि (वासुदेवा०) इस सूत्र से ब्रह्म वैवर्तादिक पुराणों का भाष्य से पूर्व निर्माण होना सिद्ध होता सो नहीं क्योंकि भाष्यकार ने अपने सूत्र में लिखा है (सर्वेश्वर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्यपाणिनेः । एकदेशविकारेहि नित्यत्वंनोपपद्यते) इस वाक्य से भाष्यकार के मत में शब्द

नित्य होने से उनके वाच्यों का अनित्यों में प्रतिष्ठित करना यह मनुष्यों का काम है भाष्यकार का दोष नहीं अर्जुन और वासुदेव शब्द अनेकार्थ वाचक हैं जैसे अर्जुन [illegible] और धवल वा हस्त वाचक है और वासुदेव शब्द परमात्मा वाचक है इससे ब्रह्मवैवर्तादिक पुराणों का भाष्य से पूर्व सिद्ध होना सिद्ध नहीं होता ॥

॥ उत्तर धर्म्मसभा की ओर से ॥

भाष्य में वेद न्याय आदि लिखने से पृथक् २ वेदादिकों को वे अर्थ नहीं होसक्ती क्योंकि व

अथवा कल्प शब्द मात्र से तत्तद् विषयों का ज्ञान नहीं होसक्ता किन्तु वेद कोई चीज है यह जरूर साबित होता है और घट देखने के वास्ते मध्यस्थों को भी जरूर देखता है नहीं तो पटको में सम्बन्ध होकर रहजायगा जिसका उत्तर यह है कि सूर पट को भी देखता है और दूसरे इसका आशय यह है कि प्रसङ्ग से काम करने में एकको व्यापार से सब काम सिद्ध होते हैं इस वास्ते न्यायवात अनेक काम करना न्याय है और शब्द नित्य हैं उनके वाच्य न रहने से भी शब्द कहसक्ते हैं यह बात नहीं क्योंकि लोक में वाच्य के अप्रसिद्ध होने से शब्द का प्रयोग नहीं होसक्ता अगर अन्यार्थ तात्पर्य्य शब्द का प्रयोग है तो अन्यार्थ से क्या

प्रमाण है । इस समय इनका समय एक मिनट अधिक हो गया था लाचार बन्द किये गये ॥

आर्य्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

प्रतिवादी ने जो पुराण शब्द का वाच्यार्थ सिद्ध करने में खण्ड दिया है जो पुराण शब्द विशेषण वाचक होने से अनेक प्रकार से सिद्ध होता है जैसे पुराण वस्त्र पुराण पात्रादि से चरितार्थ है परन्तु ऐसा कोई विशेष प्रमाण देना चाहिये जिससे पुराण शब्द की शक्ति ब्रह्मवैवर्तादिक ग्रन्थों में हो जाय जो ऐसा प्रमाण जब तक नहीं मिलेगा तब तक कोई विद्वान् नहीं मान सकता और पुराणों में परस्पर विरोध भी है जैसे कोई पुराण देवी के द्वारा कोई शिव से कोई विष्णु कोई सूर्यादि से संसार की उत्पत्ति लय मानता है एक दिग्दर्शन दिखाते हैं जैसे कि पद्मपुराण में (व्यामोहाय चराचरस्य जगत:०) इस श्लोक से स्वयं पुराण कहते हैं कि इस जगत में भ्रम डालने के वास्ते बनाये गये हैं अस्तु में परमेश्वर एकही है अब देखिये जिसमें एकही ब्रह्म का आरम्भ और समाप्ति पर्यन्त निरूपण किया है तो उससे विरुद्ध होने से कब प्रमाण होसकते है ॥

॥ उत्तर धर्म्मसभा की ओर से ॥

जो वादी ने कहा कि पुराण शब्द विशेषण वाचक

होसकता है सो नहीं (चत्वारो वेदः०) इत्यादि वाक्य में पुराण शब्द मिलने से उसका अर्थ ग्रन्थ हो होसक्ता है क्योंकि यह सब अर्थ ग्रन्थ ही हैं तब तो लोक प्रसिद्धि से पुराण शब्द से ब्रह्मवैवर्तादिक का करना सुगम है किन्तु इससे न मानने में वादी ने कोई वेद प्रमाण नहीं दिया इससे मालूम होता है कि कोई प्रमाण नहीं मिलता और पुराण परस्पर विरुद्ध हैं लोगों को व्यामोह कराने वाले हैं इसका जवाब अप्रकरणीय होने से नहीं कहते हैं पुराण क्या व्यामोह कराते हैं इस समय लोग वेद का अर्थ बदलकर वेद से भी लोग व्यामोह कराते हैं जैसा कि (नमस्ते रुद्र०) इत्यादि के टीका में दयानन्द स्वामी ने नमः शब्दार्थ वज्र लिख रक्खा है यह कोई शास्त्रानुसार नहीं होसक्ता और जो हमने प्रश्न किया उसका उत्तर कोई नहीं दिया अप्रकरणीय शब्द बात दिखाई यहभी एक व्यामोह कराना है

उत्तर आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

प्रतिवादी ने (सप्तद्वीपा वसुमती०) इत्यादि इस वाक्य का द्वितीयवार लेख दिया तिससे मालूम होता है कि दूसरा प्रमाण ब्रह्मवैवर्तादिकों का नहीं मिलता इस वाक्य के पूर्वही पुराणों में संघटित करदिया और प्रतिवादी कहता है कि वेदों से ब्रह्मवैवर्तादिक पुराणों का निराकरणत्व करना चाहिये इसका उत्तर पिछले पत्र में होचुका है कि पुराणों के आधुनिक होने से वेदों के नित्य होने से वेदों में पुराणों का प्रतिपादन क्योंकर आसक्ता है जैसे कि तुलसीकृत रामायण का प्रमाण वेद में क्योंकर आसक्ता है तद्वत् वेदों में पुराण का प्रमाण वा अप्रमाण दोनोंही नहीं आसक्ता है और देखिये पुराणों का परस्पर विरोध जैसे कि किसी वैष्णव को शिव के मन्दिर में लेजाना चाहो तो वैष्णव उत्तर देता है कि हमारी स्त्री शिवजी को देखकर लज्जित होती है यदि विरोध न होता शिवजी के मन्दिर में जाने से उसको इन्कार न करना चाहिये और जो कि (नमस्ते रुद्र०) में पण्डित जी ने आक्षेप किया है सो निरुक्त और निघंटु में नमः शब्द वज्र नामों में पठित है सो प्रतिवादी देख लेवे वैदिक निघंटु कोष में ॥

॥ उत्तर धर्मसभा की ओर से ॥

जो कि वादी ने कहा कि (सप्तद्वीपावसुमती०) आदि को उपादान किया सो पूर्वोक्त को वादी भूलगया या वादी के पूर्व लेख से मालूम हुआ इस वास्ते फिर कहने में आया इससे पुराण कोई चीज है यह बात साबित होती है ब्रह्मवैवर्तादिकों का ग्रहण तो लोकही से सिद्ध है और इसमें दूसरा प्रमाण सो अतीत पत्र में यजुर्वेद के ब्राह्मण का दे-

चुके हैं उसको अवलोकन करना और वेद को अनादि होने से इसके पीछे की पुराणों का ज्ञान नहीं आसकता है सो ठीक है किन्तु शाखाओं का ज्ञान वेद में आना तो कोई विघ्न नहीं है और (नम:शब्दार्थ) वज्र है इस में प्रमाण वादी को देना ठीक है हम तो प्रतिवादी हैं और [मन्यु] शब्दार्थ कोषयुक्त है इसके विषय में कोई लेख नहीं दिया जाता है कि आगामी पत्र में मिलेगा ॥

उत्तर आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

जो कि प्रतिवादी ने कहा कि वादी भूलगया यह सर्वथा असम्भव है क्योंकि शब्द के कहने मात्र से ब्रह्मवैवर्तादिक का ग्रहण होजाने में प्रमाण विशेष की अपेक्षा है यदि प्रमाण विशेष की अपेक्षा न होती तो विचार की भी कुछ आवश्यकता नहीं जैसे यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयि संहिता शब्द की ४० अध्याय में जो मंत्र भाग है उसमें शक्ति ज्ञात है जिसमें वादी वा प्रतिवादी कोई विचार का आरम्भ नहीं करते तद्वत् पुराण शब्द की शक्ति ब्रह्मवैवर्तादिकों में होती तो विचारारम्भ न होता और यदि लोकही प्रमाण है तो बहुत ऐसे अर्थ हैं कि जिनको लोग नहीं मानते जैसे कोई मनुष्य किसी लड़के को भय करता है तो होआ शब्द का प्रयोग करता है लेकिन होआ शब्द का कोई अर्थ नहीं

है वा मदार यात्रा करके इस देश में पुत्र याचना करते हैं लेकिन लौकिक में कोई उसका प्रमाण नहीं मानते और जो कि [नम: शब्दार्थ] निघंटु में दिखाया सो प्रतिवादी को देखनेही से ज्ञात होगा न कि शब्द कहने से वह शब्द गोचर होसक्ता है और मन्यु शब्द का अर्थ उणादि कोष में लिखा है ॥

॥ उत्तर धर्मसभा की ओर से ॥

वादी की भूल इससे समझी जाती है जो कि फिर भी भूलता है क्योंकि यह लिखता है कि शब्द कथन मात्र से ब्रह्मवैवर्तादिकों का ग्रहण नहीं होसक्ता हमतो लोक प्रसिद्ध शक्ति से ब्रह्मवैवर्तादिकों का ग्रहण लिखचुके हैं लोकानुरोध करने में [लिङ्ग मशि०] यदि भाष्य से सिद्ध है और [अतुल्य पदार्था०] इत्यादि व्याकरण व्यवहारों से भी सिद्ध है और होआ आदि दृष्टान्तों का खंडन करना व्यर्थ है यह सब सुनने वाले श्रोताओं को मालूम होता होगा पत्र पूरा करना मात्र प्रतिवादी का प्रयोजन है और [नम: शब्दार्थ] और [मन्यु शब्दार्थ] ग्रंथ लिखने मात्र से नहीं ज्ञात होसक्ता क्योंकि उसके ऊपर हमको वक्तव्य है और जो वादी ने कहा कि शब्द मात्र से ज्ञात नहीं होसक्ता सो भूल है क्योंकि (उच्चरितमेवशब्द: प्रत्याख्यो०) यह बात भाष्यानुकूल प्रसिद्ध है ॥

उत्तर आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

जो प्रतिवादी ने भूल २ शब्द पुनः २ प्रयोग किया है सो शब्द कथन मात्र से भूल सिद्ध नहीं होती किन्तु स्व पक्ष को साधन परपक्ष का खंडन दिखाकर मुख्य सर्व साधारण पर विदित करना चाहिये और जो कि (लिङ्ग सहित सभ्य०) इस वाक्य का यह मतलब है कि लोक में को शब्द किस लिङ्ग का है उस शब्द का ज्ञान प्राचीन ग्रंथों से करना चाहिये न कि पुराण के प्रमाण अप्रमाण इस लेख से कोई पुराण का प्रमाण वा पुराण शब्द का शक्ति ज्ञान ब्रह्मवैवर्तादिक ग्रंथों में सिद्ध नहीं होसकता क्योंकि लोक प्रसिद्ध में पुराण शब्द का यही अर्थ होता है जो कि पुरानी चीज है उसको पुराना कहते हैं जैसे कि यह स्थान नवीन की अपेक्षा प्राचीन कहा जावेगा जोकि इससे जो प्राचीन है उसकी अपेक्षा यह नवीन कहावेगा जो कि पुराणों की शक्ति ब्राह्मण ग्रंथ हैं क्योंकि सर्व साधारण में पुराने होने से पुराण कहेजाते हैं देखिये कि इन ग्रंथों का पुराण नाम लोक प्रसिद्ध होतो ग्रंथ ब्राह्मण नवीन कहेजायंगे तथा वेदों का भी नवीनत्व होना चाहिये ॥

॥ उत्तर धर्म्मसभा की ओर से ॥

(लिङ्ग०) यह भाष्य कहने का आशय यह है कि भाष्य

कार भी लोकानुरोध मानते हैं और वादी को इससे पुराण शब्द की शक्ति का ज्ञान होता है यह समझकर लेख दिया है सो भी भूल है पुराण के न मानने में जो कोई प्रमाण ही नहीं दिया और पुराण शब्दार्थ प्राचीन है इससे जो पुराना हो उसीको पुराण कहना यह वादी का आशय है क्योंकि कोई प्राचीन इमारत भी पुराण होसक्ती है और जो कहा कि ब्रह्मवैवर्तादिकों का पुराणत्व होने से ब्राह्मणादिकों को क्या कहा जायगा यों नवीन कहे जायंगे यह भी भूल है ब्राह्मण को पुराण कहने से वेद को भी नवीनत्व प्राप्त होता है इससे यह ठीक नहीं और (नमः शब्दार्थ) और (मन्यु शब्दार्थ) को दयानन्दोक्त हैं लिखें प्रमाण देना चाहिये। निहायत भूल है कि बार २ प्रश्न करते हैं उत्तर नहीं मिलता ॥

उत्तर आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

प्रतिवादी को अध्यासित होकर अपने को क्योंकि अपुराण को पुराण जानकर ब्रह्मवैवर्तादिक ग्रन्थों को वादी के हृदय में स्थित करदिया यही वादी को अर्थ यहां जान लेना चाहिये और जो प्रतिवादीने कहाकि ब्राह्मणादिग्रन्थों में वेदों का नूतनत्व सिद्ध होगा सो असम्भव है और वेदों में पुराण नवीन व्यवहार से नहीं होसक्ता और जोकि प्र-

तिवादी ने कहा कि (मन्यु और नमः शब्द) दयानन्दी है सो ठीक नहीं क्योंकि [नमः शब्द] निघंटु और [मन्यु] शब्दार्थ वाचस्पति बृहद् विधान में लिखा है जो प्रतिवादी को अवलोकन करना चाहिये वह कोष इस जगह पर उपस्थित है और अमरादि कोषों में भी [मन्युः] शब्द का क्रोध अर्थ है यदि इन शब्दों का अर्थ दयानन्द से चला होता तो इन ग्रन्थों में क्योंकर लेख होता इस वास्ते प्रतिवादी खुद भूल शब्द का प्रयोग करता हुआ स्वयं भूलगया क्योंकि जिसका अभ्यास कियाजाता है वही स्मरण रहता है [मन्यु स्त्रीके दैन्ये क्रतौ क्रोधेच] वाचस्पति

॥ उत्तर धर्म्मसभा की ओर से ॥

भूल शब्द के अभ्यास होने का कारण यह है कि जैसे लड़के को सत्य ग्रहण कराने के वास्ते कुटुम्बी लोग बारंबार बाबादि शब्दों का उच्चारण करते हैं वैसेही वादी के जाग्रत करने के लिये वही शब्द कहते हैं और पुराण शब्द से ब्राह्मण का ग्रहण है यह इस के पूर्व पत्र में वादी ने कहा है मगर उस के भी पूर्व पत्र में ब्राह्मण वेद दोनों को पुराणत्व लिखा है अब कहते हैं कि वेद को अनादि होने से न पुराणत्व न नवीनत्व कहना यह निहायत भूल की बात है जो अपना कहा हुआ भूलगये और वादी के दिखाये

कोष से (मन्यु) शब्द का क्रोध मात्र अर्थ आया है किन्तु क्रोधवाला अर्थ नहीं आया दयानन्द ने तो इसका विवरण मन्यु युक्ताय लिखा है उस से क्रोधवाला साबित होता है और वादी मन्यु शब्द को मन्यु शब्द का क्रोध अर्थ अमरादिकों में प्रसिद्ध है यह पूर्व पत्र में लिखा है उस में यह पूंछना चाहिये कि वायु पुराण से निकलाहुआ मनुष्य निर्मित अमरकोष को यदि आप लोग प्रमाण करते हो तो और पुराणों ने आप का क्या अपराध किया है और पुराण में प्रमाण आप का कहा हुआ कोष भी है उस में ४३६९ के पृष्ट में लिखा है पर बढ़जाने से नहीं लिखता ॥

उत्तर आर्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

प्रतिवादी ने अपने मन में भूल शब्द का यह अनुमोदन कर लिया बिना देखे नियमों के जिनमें लिखा हुआ है कि इतने ग्रंथ हम प्रमाण मानते हैं उन से अतिरिक्त नहीं और जो कि दयानन्दोक्त होने से प्रतिवादी ने अप्रमाण रूप माना है उस दयानन्दोक्त के प्रमाण की दृढ़ार्थ निघंटु में (नमः) शब्द का वज्र अर्थ मन्यु का क्रोध अर्थ दृढ़ करके सर्व साधारणों के ज्ञानार्थ वाचस्पति आदि की सूचना दी है नकि स्वपक्ष में प्रमाण दिखाने के वास्ते—इसी वास्ते मन्यु शब्द का क्रोधार्थ दिखाया अब क्रोध युक्त अर्थ दि-

खाते हैं यजु० अ० ८ मं० ८ (मन्युरसि मन्यु मयि धेहि०) इस में मन्यु शब्द का मन्युवान अर्थ है (गुणवचनेभ्यो मतुपोलुक) इस वार्तिक से मन्यु से मतुप् का लुक किया है इस वास्ते प्रतिवादी को भूल से अवश्यमेव निकलना चाहिये क्योंकि भूल में रहना ठीक नहीं और पुराण शब्द को ब्रह्मवैवर्तादिकों में संग न करने के लिये आर्ष प्रमाण देना आवश्यक है और जो बाबादि चाचादि शब्द कोई शास्त्रीय नहीं हैं किन्तु अधुना व्यवहार हैं अब तक वह संस्कृत को नहीं जानते तो बाबा २ ऐसा जानते जबके पिता पितामह का ज्ञान करलेते तब नहीं कहते ॥

उत्तर धर्म्म सभा की ओर से ॥

वादी भूल २ फन्दों में पड़कर अपने कहे हुये को कह कर भूलगया अगर जिसका प्रमाण दयानन्दोक्त वाक्य दृढ़ करने के लिये देते हैं उसको क्या आप नहीं मानते इस प्रमाण के देने से दयानन्द ने इस कोष के मतलब से यह अर्थ किया है यह साबित होता है निहायत भूल की बात है जिस के नाम से सर्व दिशों में मशहूर होरहे हैं उस के अभिप्राय को नहीं मानते दूसरा क्योंकर उसको मान सकता है और मन्यु शब्द का क्रोध युक्त अर्थ न करने में मनुष्य गुण वचन से लुप् किया सो ठीक नहीं क्योंकि शुक्-

लादि शब्द जो तद्वान कोषादिकों में प्रसिद्ध है उन्हीं में लुप् होता है सो महाभाष्य में स्पष्ट है अतएव अमरकोष में भी लिखा है कि (गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणि लिंगास्तु तद्वति) और नमः शब्द वज्रार्थक रहने से मनाने इस में चतुर्थी किस चाल से हुई उसका उत्तर देना चाहिये ॥

उत्तर आर्य्य समाज की ओर से—पं० देवदत्त शास्त्री

जो कि प्रतिवादी ने कहा कि वादी फन्दों में फसगया सो वादी के फसनेसे प्रतिवादी क्योंकर भूल में फसगया क्योंकि प्रतिवादी को यह अवलोकन करना चाहिये कि आर्य्य पक्ष में निघंटु यजुर संहिता का प्रमाण दिखा कर जिन कोषों को आप मानते हो उन ग्रंथों में आप के परितोषार्थ ग्रंथों का प्रमाण दिखा दिया और जो आर्य्यों का पक्ष था उसमें भी आर्ष प्रमाण ग्रंथ दिखा दिया पश्चात् दयानन्दोक्त आर्य पक्ष से क्योंकर पृथक् होगये परंतु प्रतिवादी ने ऐसा कोई प्रमाण अद्यावधि नहीं दिया जिससे कि पुराण शब्द का सत्यगृह ब्रह्मवैवर्तादि ग्रंथों में होता और प्रतिवादी ने भाष्यकार से मिलकर यह निर्णय कर लिया होगा कि भाष्यकारको शुक्लादि गुण वाची शब्दों से ही मतुप्कालुक होता है और जो मतुप् को गुणवाची शब्दों से नहीं इसको

विज्ञापन

बिदित हो कि (उदासी तत्व दर्शन) नामक पुस्तक जिसमें कि वृद्ध कुशल उदासी कृत ऋग्-वेदादि भाष्य भूमिकेंदु का खण्डन श्रीयुत पण्डित देवदत्त शास्त्री जी निर्मित छपरहो है जिस किसी महाशयको मंगाना हो श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर देश व अवध के मंत्री पं० भगवान दीन जी स्थान जिला लखीमपुर तथा ग्रंथकर्ता वैदिक पाठशाला पुराना कानपुर से मंगालेवें ॥

बिदित हो कि स्वर्ग सबजेक्ट कमेटी का लेख जो आर्यावर्त पत्र में छपा था उसको मैंने आर्य महाशयों के चित्तविनोदार्थ पुस्तकाकार करके छपवाने का उद्योग किया है क्योंकि आर्यावर्त पत्र सर्व महाशयों के तो दृष्टिगोचर होताहो नहीं इससे मैं अपने कई मित्रों की प्रेरणा से छपने को दी है छपने पर सर्व महाशयों की सेवा में प्रेषित करूंगा